तीन बहुराष्ट्रीय कंपनियों से आईआईटी का करार

सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर, 19 अगस्त। उर्जा उत्पादन के क्षेत्र में शोध को बढ़ावा देने के लिए तीन बहुराष्ट्रीय कंपनियां आईआईटी कानपुर के साथ वित्तीय व तकनीकी सहयोग करेंगी। ये कंपनियां आईआईटी मद्रास के साथ भी इसी तरह का अनुबंध करेंगी। इस कंपनियों में शेवरान, एचपीसीएल, एआरटी (अमरीका) शामिल हैं। कंपनियां चाहतीं हैं कि देश का टाप ब्रेन उर्जा क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रयोग कर उर्जा संकट से दुनिया को बचाने के लिए इफ्रोफ्रेंडली व सुरक्षित विकल्प विकसित करें।

आईआईटी में आयोजित प्रेसवार्ता को सम्बोधित करते हुए निदेशक डा. एसजी धांडे ने बताया कि बहुराष्ट्रीय कंपनी शेवरान एचपीसीएल और एआरटी के साथ आईआईटी कानपुर ने एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किया है। शेवरान और एआरटी अमरीका की तेल, गैस व रिफायनरी की बड़ी कंपनियां है। एचपीसीएल तेल व पैट्रोलियम रिफायनरी क्षेत्र की जानीमानी कंपनी है। उन्होंने बताया कि आईआईटी इस कंपनियां के साथ युनिवर्सिटी पार्टनरशिप प्रोग्राम शुरूकर रहा है। इस अनुबंध के तहत कंपनियां केमिकल इंजीनियरिंग विभाग में अध्यापन व शोध को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय सहयोग प्रदान करेंगी। आज शेवरान

- ऊर्जा क्षेत्र में होगा शोध
- कंपनियों में शेवरान, एआरटी और एचपीसीएल
- आईआईटी मद्रास के साथ भी करार करेंगी कंपनियां
- शेवरान ने दिया आईआईटी को सवा लाख का चेक

बहुराष्ट्रीय कंपनी शेवरान के अध्यक्ष जीत सिंह बिन्द्रा, आईआईटी के निदेशक डा. धांडे को चेक भेंट करते हुए तथा आईआईटी में आयोजित पत्रकार वार्ता को सम्बोधित करते हुए डा. एसजी धांडे और शेवरान कंपनी के अध्यक्ष जीत सिंह बिन्द्रा व अन्य।
(फोटो : एसएनबी)

कंपनी ने आईआईटी को एक लाख 25 हजार का चेक सौंप दिया। शेवरान ग्लोबल मेन्युफैक्चरिंग के अध्यक्ष जीत सिंह बिन्द्रा ने कहा कि भारत सहित दुनिया उर्जा संकट से जूझ रही है। हमारी कंपनी चाहती है कि आईआईटी कानपुर और मद्रास के प्रतिभाशाली छात्र पैट्रोलियम उत्पादन के क्षेत्र में नये-नये शोध करें। यहां के छात्र पहले भी कंपनी में काम करते रहे हैं। शेवरान कंपनी विश्व के सर्वश्रेष्ठ तकनीकी संस्थाओं के साथ पार्टनरशिप प्रोग्राम शुरूकर रही है। इसमे अमरीका, इंडोनोशिया, थाइलैंड, आस्ट्रेलिया और इंग्लैण्ड के साथ ही भारत के भी तकनीकी शैक्षिक संस्थान शामिल हैं। उन्होंने बताया कि शेवरान कंपनी की वित्तीय सहयोग से आईआईटी के केमिकल इंजीनियरिंग विभाग उनके गुरु डा. सीवी शेषाद्रि और शेवरान-चेयर स्थापित किया जाएगा। प्रयोगशालाओं का अपग्रेडशेन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वे अमरीका में कार्यरत हैं। दिल से भारतीय हैं तथा अपने संस्थान के लिए यथा संभव कुछ करना चाहते हैं।

पेट्रोलियम उत्पादन का स्वरूप बदल देंगे आईआईटी के उपकरण

कानपुर, 19 अगस्त (एसएनबी)। आईआईटी कानपुर पेट्रोलियम उत्पान को बढ़ाने के लिए विशालकाय प्रोसेसिंग उपकरण को छोटा बनाने में अद्भूत सफलता अर्जित की है। आईआईटी के निदेशक डा. धांडे ने कहा कि यहां विकसित छोटे उपकरण पैट्रोलियम उत्पादन का चेहरा बदल देंगे।

डा. धांडे ने बताया कि शेवरान ग्लोवल पेट्रोलियम उत्पादन के क्षेत्र में एक मशहूर अमरीकी कंपनी है। जमीन से डीजल, पेट्रोल और गैस निकालने के लिए बड़ी-बड़ी मशीनों का उपयोग किया जाता है। इससे उत्पादन को गति देने या एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित करने में मुश्किल आती हैं। इन मशीनों की जगह आईआईटी कानपुर के केमिमल इंजीनियरिंग विभाग ने स्कोल प्रोसेसिंग उपकरण का विकास किया है। कंपनियां ऐसे उपकरण के लिए सालों से इंतजार कर रहीं थीं।

पेट्रोलियम पदार्थो का गाद भी निकालेगा 'कैटलिस्ट'

कानपुर, 19 अगस्त (एसएनबी)। पेट्रोलियम पदार्थो के गाद से भी अब शोधित किये जाएंगे पेट्रोल। आईआईटी कानपुर ने कैटलिस्ट नामक एक ऐसा रसायन विकसित किया है जो दो रसायनिक पदार्थो के बीच प्रतिक्रिया कराकर उनका अधिकतम शोधन कर सकेगा।

आईआईटी केमिकल विभाग के प्रो. डी कुंजरु ने बताया कि कैटालिस्ट रसायन पर पिछले कई वर्षो से शोध किया जा रहा था। इसके लिए शेवरान कंपनी से वित्तीय सहयोग मिला है। उन्होंने बताया कि रिफायरी से डीजल और पेट्रोल निकालने के बाद बड़ी मात्रा कचरे या गाद बच जाते हैं। जबकि गाद को शोधित कर पेट्रोल निकाला जा सकता है। इसके लिए आईआईटी कानपुर ने कैटलिस्ट नामक रसायन विकसित किया है कैटलिस्ट दूध से दह जमाने में 'जामन' की तरह काम करेगा।

प्लास्टिक कचरे से पेट्रोल निकालने की तकनीकी विकसित की आईआईटी ने

कानपुर, 19 अगस्त (एसएनबी)। देश-विदेश के वैज्ञानिक ग्लोबल उर्जा संकट से बचाने के वैकलिक उर्जा के विकास में जुट गये हैं। अमरीकी कंपनी 'शेवरान ग्लोवल' खष अध्यक्ष जीत सिंह बिन्द्रा ने बताया कि भारत में महुआ से एथनोल और प्लास्टिक कचरे पेट्रोलियम पदार्थ तैयार किये जा सकते है।

श्री बिन्द्रा न कहा कि भारत को इक्कीसवीं सदी में ग्लोबल-भूमिका निभानी है। उसे विकास के लिए उर्जा की जरूरत है। ऐसे विशाल व महान देश को किसी एक ही उर्जा-श्रोत पर आश्रित नहीं रहना चाहिए। जल, वायु के साथ ही तरह तरह के खाद्य प्रदार्थो से भी उर्जा विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित करदा होगा। ब्राजील की तरह भारत भी गन्ने के साथ ही महुआ से भीं एथनाल विकसित कर सकता है। भारतीय गांवों और शहरों के लिए प्लास्टिक कचरा एक बड़ा सिरदर्द बन गया है। इससे प्रदूषण के साथ ही कई तरह की खतरनाक बीमारियां भी पैदा होती है। नालें जाम होते हैं। नदियों में प्रदूषण फैलता हैं। शेवरान कंपनी के सहयोग से आईआईटी कानपुर ने प्लास्टिक कचरे पेट्रोल निकालने की तकनीक विकसित की है। उन्होंने बताया कि पिछले दो वर्षो से आईआईटी के वैज्ञानिक इस तकनीक पर शोध कर रहे थे। उन्होंने बताया कि दुनिया भर के वैज्ञानिकों ने आईआईटी की तकनीकी को गंभीरता से लिया है। इस तकनीक को व्यवसायिक रूप देने में अभी समय लगेगा। लेकिन इतना तय है कि जल्द ही देश विदेश में प्लास्टिक-कचरे से पेट्रोलियम पदार्थो का शोधन-कार्य शुरू कर दिया जाएगा।

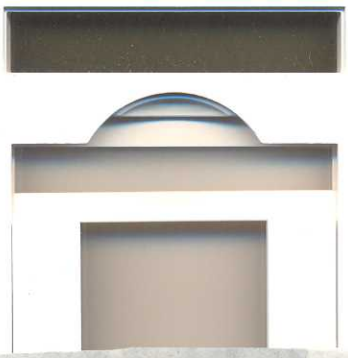

आईआईटी पर शेवरॉन मेहरबान

- संस्थान को 1.25 लाख, यूजी लैब के लिए 25 हजार डॉलर
- आईआईटी के छात्रों को 150 देशों में देगा जॉब

कार्यालय संवाददाता कानपुर

बहुराष्ट्रीय कम्पनी शेवरॉन आईआईटी, कानपुर और आईआईटी, मद्रास के रसायन विभाग पर मेहरबान हो गई है। आईआईटी, कानपुर को 1.25 लाख डॉलर की रकम देने के बाद इस बात की भी घोषणा की गई कि संस्थान की अण्डर ग्रेजुएट लैब को भी शेवरॉन 25 हजार डॉलर देकर अति आधुनिक बनाएगी। दरअसल शेवरॉन की यह मेहरबानी इसलिए है क्योंकि कम्पनी के प्रेसीडेंट आईआईटी, कानपुर के एल्युमिनाई हैं।

आईआईटी में मंगलवार को संस्थान को चेक दिए जाने पर आयोजित समारोह के बाद पत्रकारों से वार्ता में शेवरॉन के प्रेसीडेंट जीत एस बिन्द्रा, वाइस प्रेसीडेंट अशोक एस कृष्णा और आईआईटी निदेशक प्रोफेसर संजय गोविन्द धांडे ने बताया कि शेवरॉन संस्थान को केमिकल इंजीनियरिंग फील्ड में पीठ (चेयर) के लिए लम्बे समय से मदद कर रहा है। यह पीठ प्रोफेसर कुन्जरू के पास है। अपने गुरु प्रोफेसर सीवी शेषाद्रि की याद में भी एक पीठ स्थापित करने के लिए राशि दी है। कैमिकल इंजीनियरिंग लैब को अपग्रेड करने के लिए भी 25 हजार की राशि दी गई है। 30 हजार डॉलर नई पीठ स्थापित करने के लिए दी गई। 25 हजार डॉलर की राशि पहले ही दी जा चुकी है। कुल 1.25 लाख डॉलर की राशि दी गई है।

उन्होंने बताया कि संयुक्त पार्टनरशिप प्रोग्राम के अन्तर्गत आईआईटी, एमआईटी, बैंडंग इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी इण्डोनेशिया, शुलालांगकार्न यूनिवर्सिटी थाईलैण्ड, यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया, स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी और टेक्सास यूनिवर्सिटी समेत अन्य विश्वविद्यालयों का चयन किया गया है। शेवरॉन आईआईटी कानपुर से दिसम्बर माह में प्लेसमेंट भी करेगा। उन्हें विश्व के 150 देशों में जॉब दिया जाएगा।

शेवरॉन के प्रेसीडेंट जीत एस बिन्द्रा ने आईआईटी निदेशक को दिया चेक

मेरे यहाँ तो बिजली नहीं है !

दुनिया भर में अपना नेटवर्क फैलाए आईआईटी, कानपुर के पूर्व छात्र और ऊर्जा क्षेत्र की अग्रणी कम्पनी शेवरॉन के प्रेसीडेंट जीत एस बिन्द्रा के अमेरिका स्थित घर पर बिजली नहीं है। उनका आवास सोलर एनर्जी से रोशन होता है। हर जरूरत सोलर एनर्जी पूरी कर देती है। वाराणसी में जन्मे प्रेसीडेंट बिन्द्रा ने बताया कि वे जहाँ जैसी जरूरत हो, वैसी ऊर्जा का विकास चाहते हैं। पेड़ों से कागज बनता है। इसी कागज से अगर पेट्रोल बन सके तो अच्छा हो। यह काम चल रहा है। इसके अलावा महुआ आदि से भी पेट्रोल निकाला जा सकता है। कानपुर आईआईटी से उनका लगाव है। 64 बैच के बिन्द्रा का कहना था कि वे राशि गुरु दक्षिणा के रूप में दे रहे हैं।

IIT-K inks MoU with Chevron for more funds

TIMES NEWS NETWORK

Kanpur: IIT-K has signed an MoU with a leading multinational, Chevron which will continue funding IIT programmes in teaching and research, here on Tuesday.

Along with IIT-K, IIT-Madras has also ventured into a similar MoU with Chevron. The two IITs have been bestowed with 'University Partner Institutions', a joint university partnership programme developed in collaboration with leading universities around the world to establish new programmes, support faculty and provide student scholarships.

This program is intended to connect Chevron with most exceptional talent in the world found in the universities such as the IITs in India, Massachusetts Institute of Technology, Bandung Institute of Technology in Indonesia, Chulalongkorn University in Thailand, University of Western Australia, Stanford University and Texas A&M University. Universities are selected based on their excellent reputation, forward thinking and result-oriented education department.

TOI

Dignitaries at IIT -K during the signing of an MoU between IIT-K and Chevron

The Chevron will provide in 2008, a funding support of $125,000 to the Indian Institute of Technology, Kanpur. The funding will assist the institute in its efforts to maintain excellence in teaching and research.

The multinational company Chevron will continue funding for the Chevron chair in the Department of chemical engineering. The chair is currently held by professor Deepak Kunzru. Partial funding will help to create a new chair in the name of the late Professor CV Sheshadri.

Funding will also help to upgrade undergraduate laboratories in the department of chemical engineering.

प्लास्टिक कचरे से बनाया पेट्रोल-डीजल

कानपुर, 19 अगस्त। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान ने पेट्रोलियम रिफाइनरी के लिए कम वजन व कम कीमत वाले उपकरण विकसित किये हैं। जिनका ट्रायल रिफाइनरी में किया जा रहा है। कच्चे तेल के कचरे से भी पेट्रोलियम पदार्थ बनाने के लिए आईआईटियंस जुटे हैं। प्लास्टिक के कचरे से डीजल-पेट्रोल जैसे पेट्रोलियम उत्पाद भी बनाये जा चुके हैं। अब इनकी उत्पादन लागत का आंकलन किया जा रहा है।

शेवरान ग्लोबल मैन्यूफैक्चरिंग के अध्यक्ष जीत बिंद्रा ने १.२५ लाख डालर विभिन्न मदों में संस्थान को दिये हैं। स्वर्ण जयंती वर्ष में संस्थान को नये पाठ्यक्रम के लिए अतिरिक्त २५ हजार डालर देंगे। यह जानकारी संस्थान के निदेशक संजय गोविंद धांडे व शेवरान के अध्यक्ष जीत बिंद्रा ने संयुक्त पत्रकार वार्ता में दी। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक श्री धांडे ने बताया कि कच्चे तेल के शोधन के बाद जो कचरा निकलता है, उससे भी पेट्रोलिय पदार्थों का उत्पादन करने के लिए कवायद शुरू की गयी है।

वार्ता करते एस.जी. धांडे, पूर्व छात्र जीत बिंद्रा।

शेवरान ने 65 लाख रुपया दिया आई.आई.टी. को

उन्होंने यह भी कहा कि संस्थान के मेधावी एनर्जी इनवायरमेंट व मैटीरियल पर भी अब शोध कर रहे हैं। संस्थान के पूर्व छात्र व शेवरान ग्लोबल मैन्यफैक्चरिंग के अध्यक्ष जीत बिंद्रा ने बताया कि वर्ष २००५ में वे संस्थान आये थे, उस समय आईआईटी के साथ मिलकर काम करने की इच्छा जतायी थी। उन्होंने बताया कि केमिकल डिपार्टमेंट की प्रयोगशालाओं को बेहतर बनाने के लिए ७० हजार डालर की धनराशि, फैकल्टी चेयर के नाम पर २५ हजार डालर व गुरु स्व.शेषाद्रि के नाम पर ३० हज़ार डालर की धनराशि मुहैया करायी है। श्री बिंद्रा ने इस धनराशि की चेकें संस्थान के निदेशक को सौंपीं। उन्होंने आईआईटी को पांच परियोजनाओं पर काम सौंपा है। जिसमें कुछ परियोजनाओं का आईआईटी ने काम पूरा कर लिया है। इन परियोजनाओं का ट्रायल भी रिफाइनरी में शुरू कर दिया गया है। कम्पनी और आईआईटी संयुक्त रूप से कुछ उपकरणों का पेटेंट भी करा रही है। अखाद्य पदार्थों से पेट्रोलियम उत्पाद बनाने के लिए कम्पनी प्रयासरत है।

प्लास्टिक कचरे से भी बनानी होगी ...

के अंतर्गत विश्व के कई देशों के महत्वपूर्ण संस्थानों जैसे अमेरिका का मैसाच्यूसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी (एमआईटी), इंडोनेशिया का बैनडंग इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी, थाईलैंड का चुलालोंगकार्न यूनिवर्सिटी, यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न आस्ट्रेलिया, स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी एवं टेक्सास ए एंड एम यूनिवर्सिटी को जोड़ा है। आईआईटी के पूर्व छात्र श्री बिंद्रा ने बताया कि कंपनी में आईआईटी के कई छात्र काम कर रहे हैं। यहां के छात्रों को बेहतर पैकेज व संसाधनों के साथ यूके, इंडोनेशिया, सिंगापुर सहित दूसरे देशों के लिए चयनित करने का सिलसिला जल्दी ही शुरू किया जायेगा।

उन्होंने बताया कंपनी भारत में आईआईटी कानपुर व आईआईटी मद्रास को बेहतर एवं उत्कृष्ट शिक्षा एवं अनुसंधान व विकास के लिए आर्थिक सहायता दे रही है। 25 हजार डालर का प्रयोग संस्थान में केमिकल इंजीनियरिंग विभाग में स्थापित 'शेवरॉन पीठ ' के छात्रों को छात्रवृत्ति व शिक्षकों को शोध के लिए किया जायेगा। इसका संचालन संस्थान के प्रो. दीपक कुंजु करेंगे। श्री बिंद्रा ने दूसरी पीठ (चेयर) अपने शिक्षक सीवी शेषाद्रि की स्मृति में बनाई है। इसके लिए उन्होंने संस्थान को 30 हजार डॉलर दिये हैं। इसके साथ कंपनी ने केमिकल इंजीनियरिंग विभाग के अडंर ग्रेजुएट छात्रों की प्रयोगशालाओं को उच्च स्तरीय बनाने तथा छात्रों को छात्रवृत्ति देने के लिए 65500 डॉलर की राशि प्रदान की। श्री बिंद्रा ने कुछ अन्य परियोजनाओं को मिलाकर कुल एक लाख 25 हजार डॉलर के चेक निदेशक प्रो. संजय गोविंद धांडे को सौंपे। उन्होंने 2009 में 25 हजार डॉलर और देने की घोषणा करते हुए कहा कि वित्तीय सहयोग का यह सिलसिला जारी रहेगा। इसके पहले निदेशक प्रो. धांडे व श्री बिंद्रा ने इन परियोजनाओं के समझौते पर हस्ताक्षर किये। इसं दौरान हिंदुस्तान पेट्रोलियम के अधिशासी निदेशक के मुरली व अमेरिका की कंपनी एडवांस रिफाइनरी के डॉ. राजा गोपालन मौजूद थे। निदेशक प्रो धांडे ने बताया कि शेवरॉन की मदद से केमिकल इंजीनियरिंग विभाग तथा संस्थान अपनी शोध परियोजनाओं को आगे बढ़ा सकेगा।

अब बेकार पॉलीथीन से भी बनेगा पेट्रोल

आईआईटी कानपुर को रिसर्च में मिली सफलता

कार्यालय संवाददाता कानपुर

■ कॉमर्शियल इस्तेमाल दो साल बाद

बेकार प्लास्टिक और पॉलीथीन से पेट्रोल बनाने का आईआईटी कानपुर का सपना साकार हो गया है। संस्थान की इस खोज को व्यवसायिक स्तर पर आने में अभी दो साल और लगेंगे। फिलहाल यह देखा जा रहा है कि बड़े पैमाने पर इस तरह पेट्रोल बनाने में लागत कितनी आएगी। इसी तरह क्रूड ऑयल से पेट्रोल और इसके उत्पाद निकाले जाते

के बाद अवशेष बचे टारकोल (तारकोल) से भी पेट्रोल निकालने की तकनीक विकसित करने में आईआईटी ने सफलता पा ली है। इससे 30 से 40 फीसदी वेस्ट टारकोल से पेट्रोल मिल सकेगा। विश्व स्तर पर बढ़ती ऊर्जा की माँग को देखते हुए बहुराष्ट्रीय कम्पनी शेवरॉन, हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कम्पनी लिमिटेड (एचपीसीएल), एआरटी और आईआईटी, कानपुर ने आपसी सहयोग से नई तकनीक विकसित करने और ऊर्जा के नए स्रोत ढूँढने का फैसला किया था। शेवरॉन ल्यूमिनस ग्लोबल के इंजीनियरिंग कंसल्टेंट क्रिस परिमी ने बताया कि पॉलीएथिलीन और प्लास्टिक बैग्स आदि से पेट्रोल बनाने पर आईआईटी कानपुर की रिसर्च कामयाब रही है।

लागत पर शुरू हुआ मंथन - पेज 11

अब 'तारकोल' से निचोड़ेंगे पेट्रोल

कानपुर, शिक्षा संवाददाता : आईआईटी अमेरिकी कंपनी शेवरॉन की मदद से पेट्रोलियम उत्पादन को बढ़ाने की बेहतर तकनीक खोज रहा है। संस्थान ने पेट्रोल शोधन के बाद बचने वाले गाढ़े तारकोलनुमा पदार्थ से भी बूंद

- प्लास्टिक से भी बनायेंगे ईंधन
- सस्ते सोलर पैनल पर भी शोध

बूंद पेट्रोल दोहन की तकनीक खोज निकाली है।

आईआईटी निदेशक प्रो. संजय गोविंद धांडे को चेक सौंपते शेवरॉन के ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग अध्यक्ष जीत एस बिंद्रा। जागरण

पेट्रोल प्रोसेसिंग में उसे उबालने के बाद सबसे बाद में जो गाढ़ा तारकोल जैसा पदार्थ बचता है। फिलहाल वह किसी काम नहीं आता जबकि शोध के मुताबिक उससे भी पेट्रोल तैयार निकाला जा सकता है। प्रो. दीपक कुंजु के नेतृत्व में हो रहे शोध में ऐसे उत्प्रेरक तैयार किये गये हैं, जिससे एक एक बूंद पेट्रोल निकाल लेने की क्षमता है। शेवरॉन इस तकनीक का परीक्षण कर रही है। परीक्षण में देखा जा रहा है कि इस तकनीक को लागू करने में कितना खर्च आयेगा और उससे तैयार पेट्रोल से कितनी बचत होगी? संस्थान में पेट्रोल प्रोसेसिंग में काम आने वाली मशीनों को छोटा करने पर भी शोध हो रहा है। बड़ी बड़ी मशीनों का आकार छोटा करने, ऊर्जा खपत

■ शेष पृष्ठ 2 पर

प्लास्टिक कचरे से भी बनानी होगी ऊर्जा

कानपुर, शिक्षा संवाददाता : पूरा विश्व ऊर्जा संकट से जूझ रहा है। ऐसे में पानी, सौर, वायु पौधों के अलावा प्लास्टिक अपशिष्ट तक से ऊर्जा बनानी होगी। और ऐसा आईआईटी जैसे संस्थान कर सकते हैं। संस्थान के शोध से भारत ही नहीं पूरी दुनिया लाभान्वित होगी। यह बाते अमेरिका की तेल रिफाइनरी तथा ऊर्जा क्षेत्र की बड़ी कंपनी शेवरॉन के ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग अध्यक्ष जीत एस बिंद्रा ने पत्रकारों से वार्ता में कही। उन्होंने आईआईटी के केमिकल इंजीनियरिंग विभाग के विकास व शोध के लिए सवा लाख डॉलर की राशि दी। वह भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) में शेवरॉन के सहयोग से चल रही शोध परियोजनाओं के बाबत शहर में आये थे। उन्होंने बताया कि पूरा विश्व ऊर्जा संकट से त्रस्त है। शेवरॉन कागज बनाने में बचने वाले फालतू पदार्थ तथा प्लास्टिक अपशिष्ट से ऊर्जा पैदा करने के लिए काम कर रही है। जिसमें आईआईटी के शोध मददगार हो सकते हैं। उन्होंने बताया कि शेवरॉन ने 'यूनिवर्सिटी पार्टनरशिप प्रोग्राम'

शेवरॉन के अध्यक्ष ने आईआईटी को दिये सवा लाख डॉलर

■ शेष पृष्ठ 2 पर